# इस्लाम पोथी

**अल्लामा नज्म आफ़न्दी**

अल्लाह बना दे इसे आकाश की बानी
कहनी मुझे भाषा में है इस्लाम कहानी
लिक्खी न गई कोई जो इस तरह की पुस्तक
इस्लाम को समझे नहीं इस देश के सेवक
चर्चे हैं कि फैला है ये तलवार के बल पर
स्थान है बे नींव के दीवार के बल पर
सब ढूँढ रहे हैं उसे शीशे के नगर में
शाही के समाचार हैं दुनिया की नज़र में
उस रूप में सत धर्म का पैग़ाम नहीं है
माया के चमत्कार में इस्लाम नहीं है
सच्चाई की शक्ति का महाकाज है इस्लाम
समझे जो कोई तो जनता राज है इस्लाम
इस धर्म का दुनिया में संदेसा था जब आया
क़ाबू में ग़रीबों की न माया थी न काया
कमज़ोर को आराम न बाहर था न घर में
अंधेर ही अंधेर था संसार नगर में
वह दिन थे कि ढूँढे नहीं मिलती थी भलाई
छायी हुई थी सारे ज़माने पे बुराई
सच्चाई का प्रचार न उत्तर था न दक्खिन
बिगड़े हुए मुद्दत से थे इन्सान के लच्छन
चमका जो अरब देश की क़िस्मत का सितारा
कर्तार ने आकाश से एक नूर उतारा
मक्के में रिसालत की बिछायी गयी मसनद
पैदा हुये हाशिम के घराने में मुहम्मद
इस तरह दुलहन भी कोई देखी न संवरती
मुखड़े की पड़ी छूट तो जगमग हुयी धरती
क्या जानिये किस भेस में किस रूप में आया
सुनते हैं किसी आँख ने देखा नहीं साया

छः साल में माँ-बाप जो परलोक सिधारे
बचपन से लड़कपन हुआ दादा के सहारे
जब सर से उठा आप के दादा का भी साया
एक और प्रेमी ने कलेजे से लगाया
बच्चों से ज़्यादा ये भतीजे पर फ़िदा थे
पाला अबू तालिब ने जो हज़रत के चचा थे
छोटे ही से सिन में थीं समझ बूझ की बातें
कटते थे बड़े सोंच में दिन हो कि हों रातें
दाया की तरह सब की निगाहों में भला था
ये चार बरस घर में हलीमा के पला था
सुन्दर था जो हर काम तो हर बात थी बाला
दाया को ये अचरज था कि बच्चा है निराला
बे वक़्त न खाया कभी बे वक़्त न सोया
मचला न कभी दूध के कारन न वह रोया
इस चाँद में आखों ने कोई खोट न पायी
जो मन की सफ़ाई थी वही तन की सफ़ाई
भूले से कभी अपनी बड़ाई न जतायी
बेटों को हलीमा के समझता रहा भाई
बातें न घमण्डी कभी हृदय में समायी
यूँ साथ दिया उनका कि भेड़ें भी चरायीं
बच्चों की तरह उसने कोई खेल न खेला
उसके लिये दुनिया में तमाशा था न मेला
गाहक था वह हर आन ग़रीबों की ख़ुशी का
संसार में दुख देख न सकता था किसी का
बीता वह लड़कपन का समय आयी जवानी
इंसान के जीवन की घड़ी सब से सुहानी
निर्दोष थी जो फूल की चन्दन की तरह से
जो पाक रही सुबह के दामन की तरह से

सतवन्त था ऐसा जिसे दुश्मन ने भी माना
सादिक़ उसे बचपन में ही कहता था ज़माना
नेकी ने बचाया था ज़बानों के छुरों से
वह दूर ही रहता था बुरायी से बुरों से
निर्बल को भी सुख हो इसी उलझन में पड़ा था
विधवा से किया ब्याह कि पुण्य इसमें बड़ा था
सरपंच बना क़ौम का झगड़ा भी चुकाया
धरती को बड़ी सख़्त लड़ाई से बचाया
अन-जल के लिये करना ही पड़ता है ये कन्था
व्यापार बुज़ुर्गों की तरह इसका चलन था
उभरी हुयी थी हाथ में ईमान की रेखा
व्यापार में ऐसा कोई धर्मी नहीं देखा
कुछ दिन में नयी प्यार की सूरत नज़र आई
पैदा हुआ एक सबसे बड़ा उसका फ़िदायी
एक तारों भरी रात में आँचल जो समेटा
चौथा अबूतालिब को मिला चाँद सा बेटा
काबा में हुआ जिसका जन्म ये वह बली है
अल्लाह के घर में हुआ पैदा कि अली है
घर उसका चलन उसका वही ज़ात वही है
जो बात मुहम्मद की है हर बात वही है
जनता की भलाई में बहुत रंज सहे हैं
हर काम में इन दोनों के दिल एक रहे हैं
जिन बातों में थी खोट बहुत उनसे परे थे
भूले से न की मूर्ति-पूजा वह खरे थे
दिल जिस से मिले ऐसा न था मेल किसी से
लाखों में मुहम्मद की मोहब्बत थी अली से
जी लगता था बस्ती से अलग शहर से बाहर
स्थान बना रखा था एक ग़ार के अन्दर
जो क़ौम थी वह पाप के चक्कर में पड़ी थी
इन्सान है करसते पे ये फ़िक्र उसको बड़ी थी
क्या कष्ट की भरमार है अपराध का रेला
बैठा वह यही सोंचता रहता था अकेला
करता है हर एक अपने क़बीले की बड़ाई
बे बात भी हो जाती है आपस में लड़ाई
बदले का लगा रोग तो कम ही नहीं होता
दादा की जगह लड़ने को तय्यार है पोता

आनन्द यहूदी है जो मूँह सूद का बरसे
ईसाई हैं भटके हुए ईसा के डगर से
कुछ लोग इसे अपनी समझते हैं जो हेटी
धरती में दबा देते हैं पैदा हो जो बेटी
इन्सान ने इन्साँ का बनाया है यह क्या हाल
है जानवरों से भी गुलामों का बुरा हाल
किस ओर है संसार का बहता हुआ धारा
नेकी से हो सम्बन्ध तो मुश्किल है गुज़ारा
करते ही नहीं फ़र्क बुरे और भले में
अवक़ात गुज़रते हैं शराब और जुए में
कब तक यही अन्याय का व्यापार रहेगा
कब तक यह अधाधुन्ध समाचार रहेगा
दिन रात ग़रीबी है अमीरी का निवाला
आँखे हैं मगर कोई नहीं देखने वाला
एक रोज़ इसी ध्यान में ओढ़े हुये चादर
चुपचाप वह लेटा हुआ था ग़ार के अन्दर
दुनिया को बदलने का चलन सोच रहा था
इन्सान की मुक्ति के जतन सोच रहा था
जैसे कभी गर्मी में बड़ी प्यास लगी हो
सामान न हो कोई मगर आस लगी हो
दुहरा ही रहा था ये कभी मन में
पैदा हुआ एक भाव नया मन की लगन में
जैसे कोई जागे हुये को और जगा दे
तो जैसे कोई प्यार के दीपक को बढ़ा दे
उस आन में जिबरील फ़रिश्ते की ज़बानी
धरती पे सुनी उसने यह आकाश की बानी
ऐ कमली में लिपटे हुये उठ जिक्रे खुदा कर
दुनिया को जगा, दीन का पैग़ाम सुनाकर
सब उसके सिंहासन में वह पर्वत हो कि रायी
बन्दों को बता पालने वाले की बड़ाई
घर अपने चला सुन के यह(।) काम की आवाज़
हर ओर से पैदा हुयी परनाम की आवाज़
एक एक ने त्रिलोक धनी कह के पुकारा
जंगल ने पहाड़ों ने नबी कह के पुकारा
बोझ इतना बड़ा कैसे अकेला कोई सह ले
साथी जो थी जीवन की बताया उसे पहले

फिर उसने कही भेद की यह बात अली से
मीठे हुए यह बोल उसे मिसरी की डली से
बेवा भी हुयी भाई भी इस्लाम के साथी
दोनों यह मुहम्मद को मिले काम के साथी
अब ज़ैद का नम्बर था अबूबक्र की बारी
चुपचाप ये प्रचार यह सेवा भी है न्यारी
दो एक के मन होने लगे रोज़ उजागर
बूँदें जो यह पड़ने लगीं बनने लगा सागर
फिर मन में नया हुक्म यह अल्लाह का चमका
अपनों ही में प्रचार करो पहले धरम का
कुनबे को इकटठा किया खाने पे बुला के
सब उठ गये खा ही के हंसी उसकी उड़ा के
मुश्किल है कि छोड़े कोई धर्म अपना पुराना
सच्चा भी समझकर यह बचन उसका न माना
फिर दूसरे दिन (को) भी घर अपने बुलाया
अल्लाह की कृपा का समाचार सुनाया
जो साथ मेरा देगा यह बात उसने बतायी
वह मेरी जगह लेगा वह होगा मेरा भाई
इक़रार किया इतनों में बस एक वली ने
मैं आपका साथी हूँ कहा उठ के अली ने
यह सुनके फिर उन लोगों से कहने लगे हज़रत
देखो मेरे भाई को करो इसकी इताअत
इन शब्दों में शक्ति न किसी को नज़र आयी
पहले की तरह सब ने हंसी उसकी उड़ाई
कुन्बों में किसी और का देखा न सहारा
विश्वास था अल्लह का तो हिम्मत नहीं हारा
इस दीन का प्रचार अमीरों को न भाया
पहले ये ग़रीबों के ही हृदय में समाया
किस प्रेम का उपदेश था क्या शब्द मनोहर
मक्के में मुसलमाँ नज़र आने लगे घर घर
सब हो गये आख़िर (को) मुसलमानों के दुश्मन
बे जोड़ हज़ारों में था दस बीस का जीवन
पैसे का उधर ज़ोर था गिनती में सिवा थे
थोड़े से धरम वीर मनुष्य चीज़ ही क्या थे
कितनों के गले में तो गुलामी के थे बन्धन
वह जुल्म हुए उनपे कि जीना था अजीरन

जलती हुयी रेती पे कभी उनको लिटाया
पत्थर के तले धूप में ले जा के दबाया
बैलों की तरह नाघ के बाज़ारों में खैंचा
रस्सी में गले बांध के बाज़ारों में खैंचा
आदर न पड़ोसी का न रिश्ते की रही पत
हट धर्मों के हाथों से ग़रीबों की थी दुर्गत
सौ ज़ोर उधर थे इधर एक ज़ोर अहिंसा
एक ओर था अन्याय तो एक ओर अहिंसा
डन्डों से कभी और कभी भूक से मारा
सब जुल्म थे अल्लाह के बन्दों को गवारा
लिक्खा है कि पीटे गये इस तरह बिचारे
संसार से अम्मार के माँ-बाप सिधारे
चढ़ते हुए दरया का हुआ कुछ न उतारा
बढ़ने से रुका यूँ भी न इस धर्म का धारा
कमज़ोर मुसलमान ने जब हार न मानी
अब सब ने मुहम्मद के सताने की भी ठानी
सर पर कभी कूड़े से भरे तश्त गिराये
हत्यारों ने काँटे कभी रस्ते में बिछाये
मारे कभी पत्थर कभी दी आपको गाली
सीटी कभी लड़कों ने बजायी कभी ताली
दम जिस से निकल जाय वह अन्याय किया था
उक़बा ने तो चादर से गला घूँट दिया था
जिस रोज़ अबूजहल ने हज़रत को सताया
हमज़ा थे चचा आपके गुस्सा उन्हें आया
गर्दन से जुआ मूर्ति-पूजा का उतारा
इस्लाम भी लाये और अबूजहल को मारा
चिन्ता न थी कुछ मार के अन्जान थे ऐसे
चुप हो गया वह पिट के यह बलवान थे ऐसे
अतबा था उमय्या की जो संतान का सरदार
एक रोज़ किया उस ने पयम्बर को नमस्कार
कहने लगा दुनिया तुम्हें देती है उलहना
ऐ मेरे भतीजे मुझे कुछ तुम से है कहना
तुम भी इसी बस्ती इसी भूमि में पले हो
पुरखे भी तुम्हारे हैं भले तुम भी भले हो
बातें जो नयी करते हो क्या इसका है कारण
क्यों तोड़ रहे हो ये धरम देश के बन्धन

जाति को बड़ा तुम ने तो झगड़े में है डाला
अवगुन है ये क्या मूर्ति पूजा में निकाला
अगलों के धरम को जो बुरा तुमने बताया
सब अपने बड़ों बूढ़ों को है दोष लगाया
इस देश में विपता यह नयी टूट पड़ी है
आपस में तुम्हारे ही लिये फूट पड़ी है
मन सब के ब्याकुल हैं वह नर हो कि हो नारी
शिक्षा तुम्हें कुछ दूँ अगर इच्छा हो तुम्हारी
जो कुछ मुझे कहना है वह शायद तुम्हें भा जाये
सब के लिये अच्छा हो समझ में अगर आ जाये
दो जग के स्वामी ने किया उसका न बे आस
तय्यार हुआ सुनने को उतबा की वह बकवास
उतबा ने कहा तुम को जो दौलत की हो चाहत
वह ढेर लगा देंगे कि बन जायेगा परबत
हम सब में अगर चाहते हो अपनी बड़ाई
ये भी हमें सौ जान से मंज़ूर है भाई
इस ठाठ से अब तक न यहाँ कोई बिराजा
चाहो तो बना दें तुम्हें इस देस का राजा
कुछ रोग अगर है किसी गुनवान को लाये
ये हाल तुम्हारा किसी वेदी को दिखायें
रहने के नहीं फिर ये समाचार कुढ़ेंगे
दो रोज़ की सेवा में तो हो जाओगे चन्गे
ये सुन के उसे आपने क़ुरान सुनाया
मतलब था कि राज़ अपना यही है यही माया
हृदय में शक्ति और न ज़बान पर कोई बस था
सुन हो गया सुन कर यह हुयी उसकी अवस्था
अतबा को अचम्भा था ये बलवन्त है कैसा
राज अपना है मंजूर जिसे और न पैसा
जाकर कहा अपनो से कि झगड़े को नबेड़ो
कहना मेरा मानों तो मुहम्मद को न छेड़ो
अब इससे उलझ कर कभी बात अपनी न खोना
सुन कर जो मैं आया हूँ वह जादू है न टोना
फूल ऐसी सुगन्ध(।) के चुने ही नहीं मैने
इस ज्ञान के उपदेश सुने ही नहीं मैंने
यह बोल कुछ ऐसे थे कि आग और लगा दी
झगड़े को घटाने की जगह बात बढ़ा दी

मक्के में हुये ठौर से बे ठौर मुसलमान
दिन रात सताये गये अब और मुसलमान
फ़रमाया पयम्बर ने कि कुछ रोज़ को टल जाओ
छोड़ो यह जन्म भूमि हबश देश निकल जाओ
सच्चे हैं मनुष्य न्याय है उस देश में जा लो
परजा भी भली उसकी है राजा भी दयालू
यों और भी प्रसिद्ध हुई बात यह सब में
व्यापार का रिश्ता था हबश और अरब में
जो रह गये मक्के में वह नाचार सिवा थे
हबशा जो गये 100 से वह दो चार सिवा थे
इन सब के थे सरदार सगे भाई अली के
भाई हुए रिश्ते में चचेरे जो नबी के
कम उम्र थे उन सब में मगर सब से कड़े थे
नाम उनका था जाफ़र कि ये बुद्धि में बड़े थे
पहुँचे जो हबश में तो कोई रंज न दुख था
राजा के भी उपकार थे प्रजा से भी सुख था
राजा हो कि प्रजा वह कलीसाई थे सारे
इस देस में बसते थे जो ईसाई थे सारे
पहले ही थे बैठे हुये सर धुन के क़ुरैशी
झल्ला गये ये ख़ैर ख़बर सुन के क़ुरैशी
परदेस में बादल जो इधर प्रेम से बरसे
कुछ लोग चले आग लगाने को इधर (उधर) से
सीनों में दहकता (हुआ) समशान लिये थे
राजा के लिये भेंट का सामान लिये थे
इन सब में मनुष्य था यही इस काम के ढब का
इस टोली में मुखिया अमरे आस था सब का
मिल कर कहा राजा से अधर्मी हैं ये सारे
दे दें हमें सरकार गुनहगार हमारे
इस काम की रिश्वत से जो हर जेब थी भारी
कहने लगे सब उनकी सी गिरजे के पुजारी
राजा ने सुने जब ये मुसलमान के लच्छन
दरबार में बुलवाया उन्हें न्याय के कारन
पूछा ये नया धर्म है क्या तुम ने निकाला
ईसाइयत और मूर्ति पूजा से निराला
साहस था बहुत इनको जो मज़हब की तरफ़ से
जाफ़र ने जवाब उसको दिया सब की तरफ से

हम वह हैं कि थी हम में बुराई ही बुराई
सोने पे सुहागा थी बराई पे ढिटाई
सीधी थी न सच्ची थी कोई बात हमारी
हम झूट के सेवक थे तो पत्थर के पुजारी
हमने उन्हीं बातों में सदा उम्र गंवायी
भाई से रहा बैर पड़ोसी से लड़ाई
निर्धन की अवस्था का था न कोई उपाय
बलवान का कारज था कि निर्बल को सताय
पैदा हुआ इतने में मनुष्य एक महालत
नेकी का जो दरया है बड़ाई का है परबत
बे मांग मिली उस से हमें धर्म की भिक्षा
जो बात है उसकी वह बड़ाई की है शिक्षा
सिखलायी हमें एक निरंकार की पूजा
उसने कहा अल्लाह नहीं है कोई दूजा
अल्लाह की सूरत नहीं सूरज को न पूजो
अपनी ही बनायी हुई मूरत को न पूजो
विधवा का अनाथों का कभी माल न खाओ
भूले से कभी ना किसी अबला को सताओ
आपस में कभी ढंग लड़ाई का न डालो
जो बात बुराई की है सब बात को टालो
उसने हमें सच्चाई के ढर्रे पे लगाया
एक झूठ में सौ पाप हुये ये (भी) बताया

हम ने जो किया उसके हर उपदेश का पालन
मक्के में जो हठ धर्म थे सब हो गये दुश्मन
राजा ने कहा उसके वचन क्या हैं बताओ
आकाश से उतरी है जो पुस्तक वह सुनाओ
जाफ़र ने बचन सूरए मरयम के सुनाये
सुनकर उन्हें आँसू बहुत आँखों से बहाये
कहने लगा सत्य धर्म की है ये भी निशानी
इन्जील की कुरान की है एक ही बानी
फ़रयाद जो लाये थे कहा उनसे कि जाओ
दे दूँगा उन्हें तुम को ये आशा न लगाओ
बोला अमरे आस ख़बर है तुझे सुलतान
क्या हज़रते ईसा को समझते हैं मुसलमान
था सब को ही मालूम ये भेद उनके धर्म का
ईसा को समझते हैं ये अल्लाह का बेटा
सब को था यह धड़का कि बिगड़ जायेगा राजा
कुछ और सुनेगा तो अकड़ जायेगा राजा
जाफ़र ने कहा फिर भी कहय आँख मिला के
बन्दे भी हैं और पयम्बर भी ख़ुदा के
राजा ने कहा सब के ये उपदेश है सच्चा
एक तिनके बराबर वह नहीं इस से ज़्यादा
इस्लाम के दुश्मन हुये यह सुन के निरासे
मक्के को प्यासे ही गये ख़ून के प्यासे

## बक़िया हुसैन-हुसैनः एक परिचय

हिजरी को कर्बला की पवित्र भूमि पर तीन दिन की भूख और प्यास में आपके जीवन दानी मित्र, नवयुवक व कम आयु पुत्र, भाई, भतीजे, भाँजे यहाँ तक कि दूध पीता छः महीने का बालक तक शत्रुओं की तलवारों, नैज़ों और तीरों का निशाना हो गये।

आपके ख़ेमों में आग लगा दी और आपके पारिवारिक सदस्यों को जिनमें केवल एक पुरुष अर्थात् रोगग्रस्त पुत्र ज़ैनुल आबदीन थे और जिन में इस्लाम धर्म के प्रर्वतक मुहम्मद साहब की अपनी नवासियाँ तक मौजूद थीं बन्दी बनाकर अत्यन्त शत्रुता तथा अमनुष्यता के साथ कर्बला से कूफ़ा और कूफ़ा से शाम ले जाये गये।

यही दुखद और हृदय विदारक कारनामा है, जिसकी याद प्रत्येक वर्ष मुहर्रम मास में जीवित की जाती है और उसकी याद में पत्र-पत्रिकाओं के मुख्य प्रकाशन ''हुसैन नम्बर'' अथवा ''मुहर्रम नम्बर'' के नाम से प्रकाशित किये जाते हैं।

✪✪✪